बाइबल टीचर

वर्ष 17 जुलाई 2020 अंक 8

सम्पादकीय

यीशु में सो जाना

बाइबल हमें बताती है कि कई लोग जिनकी मृत्यु हो गई थी, वे फिर से जी उठे थे। प्रभु यीशु में वो सामर्थ थी कि वह मृतकों को भी जीवित कर देता था। हम मनुष्य कभी भी मृत्यु को समझ नहीं पाते। मनुष्य के लिये मृत्यु शब्द बड़ा भयानक है। बाइबल हमें बताती है कि शरीर का आत्मा से अलग होना मृत्यु है। लोग ऐसा विश्वास करते हैं कि मरने के बाद मैं फिर से जन्म लूंगा। वे सोचते हैं कि मरना और बार-बार जन्म लेना ही जीवन है।

कुछ लोग यह विश्वास करते हैं कि मरने के बाद कयामत का दिन आयेगा और लोगों को अच्छे बुरे का प्रतिफल मिलेगा। इन लोगों का विश्वास है कि शरीर का आत्मा से अलग होना मृत्यु है। मसीही लोग ऐसा विश्वास करते हैं कि मृत्यु का अर्थ यह नहीं है कि सब कुछ समाप्त हो गया है। बाइबल सिखाती है कि शरीर मिट्टी में मिल जाता है तथा आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाती है जिसने इसे दिया है (सभोपदेशक 12:7)। वास्तव में बाइबल में मृत्यु को सो जाना बताया है अर्थात नींद में सो जाना। जब हम सो जाते हैं तो दुनियादारी छोड़कर विश्राम करते है। यानि मृत्यु का अर्थात शरीर का थक जाना या समाप्त हो जाना है, परन्तु आत्मा जीवित रहती है। यहूदी लोग भी यह विश्वास करते है कि लोग बाप-दादों के साथ सो रहे हैं। (2 शमु. 7:12; 1 राजा 2:10)। यीशु ने लाजरस के बारे में कहा था कि वह मरा नहीं है परन्तु सो रहा है। (यूहन्ना 11:11)। परन्तु यह भी याद रखें कि यीशु की क्रूस पर मृत्यु हुई थी यानि वह मरकर जी उठा था (1 कुरि. 15:13)।

यूनानी लोग अपने कब्रिस्तान को सोने वाला स्थान कहते हैं जहां पर लोग सो रहे हैं। यानि जब प्रभु आयेगा तब सोये हुए लोग जाग जायेगें। आत्मा कभी मरती नहीं है, उसकी यादास्त भी होती है (लूका 16:25)। कुरि. 15:20 तथा 1 कुरि. 5:20 और थिम्स. 4:13-14 सिखाते है कि जो प्रभु में मरे हैं वे सो रहे हैं। पतरस ने भी 2 पतरस 3:4 में यही बात कही थी। कि जब कोई मर जाता है इससे हमें बहुत दुख होता है, परन्तु बाइबल की शिक्षा है कि वे सो गये हैं। (प्रेरितों 7:60)। बाइबल बताती है कि जो लोग प्रभु में मरते हैं अर्थात मसीही लोग वे धन्य है। (प्रकाशित 14:13)। परमेश्वर के लोग धन्य है क्योंकि वे मरने के बाद उसके विश्राम में प्रवेश पाएंगे। यीशु ने मृत्यु पर विजय पाई थी पौलुस कहता है, ''यदि

मसीह जी नहीं उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो। यदि हम केवल इसी जीवन में आशा रखते हैं तो हम सब मनुश्यों से अधिक अभागे हैं। परन्तु मसीह सचमुच मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए है उन में पहिला फल हुआ। क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। और जैसे आदम में सब मरते है वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे। परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से, पहिला फल मसीह, फिर मसीह के आने पर उसके लोग। सब से अंतिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है। (1 कुरि. 15:16-23)। 26 पद बताता है कि अंतिम बैरी मृत्यु नाश कर दिया जाएगा।

बाइबल कहती है कि हम पृथ्वी पर परदेशी हैं। (1 पतरस 2:11 इब्रा. 13:14)। आप यदि एक मसीही है तो आपका मृत्यु के विषय में क्या विचार है? क्या आपने प्रभु की आज्ञा को माना है? जब तक आप इस पृथ्वी पर जीवित है आपके पास यह सुअवसर है कि आप अपने आप को अनन्तकाल के लिये तैयार करें। अनन्तकाल एक ऐसा स्थान है जहां आत्माएं हमेशा तक रहेगी। एक दिन न्याय का दिन आयेगा जब सबका न्याय होगा। (इब्रा. 9:27; 2 कुरि. 5:10)। जो प्रभु में मरे हैं वे सदाकाल तक स्वर्ग में रहेंगे और जिन्होंने उसकी आज्ञा को नहीं माना वे सदाकाल तक नर्क में रहेंगे। क्या आप अपने आपको तथा परमेश्वर को धोखा तो नहीं दे रहे? एक दिन हमारा शरीर जो कि एक डेरे की तरह है पृथ्वी पर से गिरा दिया जायेगा। मसीही लोगों को प्रेरित पौलुस ने कहा था, ''क्योंकि हम जानते हैं कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा जो हाथों से बना हुआ नहीं है, परन्तु चिरस्थाई है। और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कहरते रहते हैं, क्योंकि हम उतारना नहीं चाहते, वरन पहिनना चाहते है, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए। (2 कुरि. 5:1-4)। इसी बात पर जोर देते हुए पौलुस कहता है, ''क्योंकि बहुतेरे ऐसी चाल चलते हैं, कि जिनकी चर्चा मैंने तुम से बार-बार की है, और अब भी रो-रोकर कहता हूं कि वे अपने चाल चलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। उनका अन्त विनाश है, उनका ईश्वर पेट वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं ओर पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं।" (फिलि. 3:17-20)।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, एलिय्याह या यिर्मयाह?

सनी डेविड

मेरा विश्वास है कि आप यीशु से परिचित है। किन्तु यीशु के बारे में अनेकों लोगों के अलग-अलग विचार हैं। कुछ लोगों के विचार में वह एक अच्छा गुरू या

शिक्षक था, कुछ सोचते हैं कि वह बड़े-बड़े आश्चर्य के काम करने वाला था। यीशु के विषय में आज की तरह उस समय भी लोगों के अलग-अलग विचार थे, जब वह स्वयं इस पृथ्वी पर था। एक बार की बात है जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के देश में आकर अपने चेलों से पूछने लगा, कि लोग उसके बारे में क्या कहते हैं? तो हम देखते हैं कि "उन्होंने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं और कितने एलिय्याह और कितने यिर्मयाह या भविष्द्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं उसने उन से कहा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है यह बात तुझ पर प्रकट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" (मत्ती 16:13-18)।

वास्तव में यीशु स्वयं जानता था, कि उसके बारे में लोगों के क्या-क्या विचार है। परन्तु अपने चेलों के सम्मुख यह प्रश्न रखने का उसका विशेष अभिप्राय यह था, कि वह इस प्रश्न के द्वारा उन्हें एक महत्वपूर्ण शिक्षा देना चाहता था। प्रश्न के द्वारा शिक्षा देने का ढंग भी बड़ा निराला है। ठीक इसी तरह से परमेश्वर ने भी आदम को आरंभ में एक शिक्षा दी थी, जब आदम ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके अपने आपको परमेश्वर की दृष्टि से छिपाने का प्रयत्न किया था। हम देखते हैं, कि परमेश्वर ने उससे पूछा था, कि आदम तू कहां है? वास्तव में परमेश्वर स्वयं जानता था कि आदम कहां है, क्योंकि उसकी दृष्टि से वह कहीं भी छिपकर नहीं बैठ सकता था, परन्तु सच्चाई यह है कि परमेश्वर आदम को दिखाना चाहता था कि वह देखे और अनुभव करे कि परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर वह किस स्थिति में पहुंच गया है।

सो यीशु अपने इस प्रश्न के द्वारा चेलों को यह शिक्षा देना चाहता था कि वे इस सच्चाई का अंगीकार करें कि वह वास्तव में जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और फिर वह उन्हें यह बताना चाहता था, कि इसी चट्टान रूपी अंगीकार के ऊपर कि वह परमेश्वर का पुत्र मसीह है, वह अपनी कलीसिया अर्थात मंडली बनाएगा।

परन्तु आईए, इस समय इस प्रश्न पर विचार करें कि उस समय कुछ लोग उसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, और कुछ एलिय्याह और कुछ यिर्मयाह क्यों कहते थे? प्रत्यक्ष ही है, कि यीशु के भीतर कुछ बातें अवश्य ही ऐसी होंगी जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और एलिय्याह और यिर्मयाह के बारे में प्रसिद्ध थीं। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जबकि यीशु के दिनों में ही रहकर प्रचार करता था और यीशु की मृत्यु से पूर्व ही उसकी मृत्यु हो चुकी थी, दूसरी ओर, एलिय्याह यीशु से लगभग आठ सौ पचास वर्ष हुआ था, यिर्मयाह यीशु से लगभग 600 वर्ष पूर्व हुआ था।

परन्तु फिर लोग क्यों कहते थे कि यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है? सबसे पहली बात इस बात इस विषय में जो हम देखते हैं वह यह है, कि वे दोनों एक

ही तरह का प्रचार करते थे। अर्थात यूहन्ना ने जब प्रचार करना आरंभ किया था तो उसने यह कहकर अपना प्रचार आरंभ किया, कि मन फिराओ। और फिर हम यीशु के बारे में देखते हैं कि उसने भी अपने प्रचार का आरंभ मन फिराव के प्रचार के साथ किया। यूहन्ना लोगों से कहता था कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है, और ठीक यही प्रचार यीशु ने भी किया। (मत्ती 3:1, 2; मरकुस 1:15)। यूहन्ना पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था, और वह प्रतिदिन इतने अधिक लोगों को बपतिस्मा देता था कि लोग उसे यहून्ना बपतिस्मा देने वाला कहने लगे थे। (मरकुस 1:3-5; लूका 3:3)। किन्तु यीशु के बारे में हम पढ़ते हैं, कि वह यूहन्ना से भी अधिक लोगों को बपतिस्मा देता था (यद्यपि वह अपने चेलों के द्वारा बपतिस्मा देता था)। (यूहन्ना 4:1, 2) यूहन्ना बड़ा निडर होकर प्रचार करता था। एक जगह हम देखते हैं कि जब लोगों की भीड़ उस से बपतिस्मा लेने को निकल आती थी, तो उसने कहा, "हे सांप के बच्चों, तुम्हें किसने जता दिया कि आने वाले क्रोध से भागो। सो मन फिराव के योग्य फल लाओ... और अब ही कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर धरा है, इसलिये जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है।" (लूका 3:7-9)। ठीक इसी तरह से निडर होकर यीशु भी प्रचार किया करता था। शास्त्रियों और फरीसियों को सम्बोधित करके उसने कहा, "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों को सम्बोधित करके उसने कहा, "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियो तुम पर हाय; तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गंभीर बातों को अर्थात न्याय, और दया और विश्वास को छोड़ दिया है.... हे अंधे अगुवो तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊंट को निगल जाते हो।" (मत्ती 23)। सो यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के समान था।

परन्तु, यीशु एलिय्याह की तरह भी था। एलिय्याह उस समय रहता था जबकि परमेश्वर के लोग उससे फिरकर बाल नाम के एक देवता की उपासना करने लगे थे, वे कहते थे कि हम परमेश्वर की भी उपासना करेंगे और बाल की भी करेंगे। परन्तु एलिय्याह ने उनके पास आकर कहा, कि तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि वास्तव में यहोवा परमेश्वर है तो उसके पीछे पूरी तरह से हो लो, और यदि बाल हो तो उसके पीछे हो लो। उसने कहा, बाल देवता के सारे याजकों को बुलाओ, जो कि साढ़े चार सौ के लगभग थे, और हम आज परखकर देखेंगे कि सच्चा परमेश्वर कौन हैं और उसने बाल के याजकों के सामने यह प्रस्ताव रखा, कि एक वेदी बनाओ और उस पर लकड़िया चुनकर रखो और अपना बलिदान उस पर धर दो, परन्तु उसमें आग मत लगाओ, इसके विपरीत अपने देवता से प्रार्थना करो कि वह ऊपर से आग भेजकर तुम्हारे बलिदान को स्वीकार करे। और उसने कहा, कि मैं भी ऐसा ही करूंगा और अपने परमेश्वर से प्रार्थना करूंगा और जो आग गिराकर उत्तर दे वही सच्चा परमेश्वर ठहरेगा। एलिय्याह का यह प्रस्ताव सब को अच्छा लगा। सो सबसे पहले बाल के पुजारियों ने लकड़ियों पर अपना बलिदान रखा और बाल से प्रार्थना करने लगे कि वह आग गिराकर उनके बलिदान को

स्वीकार करे। परन्तु सुबह से शाम हो गई, और बाल के पुजारी प्रार्थना कर करके थककर चुर हो गए, उनके गले सूख गए किन्तु उनका बलिदान वेदी पर वैसी ही रखा रहा। अब एलिय्याह की बारी थी। उसने लकड़ियों पर अपना बलिदान रखा और फिर लोगों से कहा, कि वेदी पर चार घड़े पानी भर कर उंडेल दो, फिर उसने कहा कि चार घड़े और पानी डालो, जब सारी लकड़ियां, बलिदान और बेदी पानी से अच्छी तरह भीग गए तो उसने कहा कि चार घड़े और पानी डालो। इसके बाद उसने परमेश्वर से प्रार्थना की, और अभी वह प्रार्थना कर ही रहा था कि ऊपर से ऐसी आग प्रगट हुई कि उससे बलिदान, लकड़िया और उसके आस-पास की सब वस्तुएं जल कर भस्म हो गई। (1 राज 18)।

यूं एलिय्याह ने अकेले ही जमकर बुराई का सामना किया, वह आत्मिक उन्माद से भरा हुआ था। जबकि लगभग सारे ही लोग बाल की ओर झुकने लगे थे, एलिय्याह परमेश्वर के लिये अकेला ही खड़ा रहा, उसने भीड़ के साथ हो लेने के विपरीत अकेले ही परमेश्वर के साथ हो लेना उचित समझा। और यही विशेषताएं यीशु में भी थीं। उसने लोगों को सच्चे वा जीवते परमेश्वर की ओर फिरने को प्रोत्साहित किया; उसने मनुष्यों की बनाई हुई शिक्षाओं, विधियों और धर्मोपदेशों का विरोध किया (मत्ती 15:9) और वास्तव में उसके इसी प्रकार के खरे उपदेशों के कारण ही कुछ लोग उसके बैरी बन गए और उसे क्रूस का दण्ड दिलवाया। सो यीशु एलिय्याह के समान था।

परन्तु कुछ लोग कहते थे कि वह यिर्मयाह है। यिर्मयाह यीशु से लगभग 600 वर्ष पूर्व उस समय हुआ था जबकि परमेश्वर ने अपने लोगों के विरूद्ध एक अन्य जाति को उभारा था कि वे उन पर चढ़ाई करके उन्हें बंधुवाई में ले जाएं, क्योंकि वे लोग परमेश्वर की आज्ञाओं से फिरकर उसके सामने उल्टी चाल चलने लगे थे। यिर्मयाह परमेश्वर का भक्त था। वह जानता था कि एक अन्य देश उनके विरूद्ध क्यों चढ़ा आता है। उसने लोगों से आग्रह किया कि पश्चत्ताप करें। परन्तु लोगों ने उसकी न मानी। और फिर वैसा ही हुआ, परमेश्वर की इच्छा अनुसार वे बंधुवाई में चले गए। जब यिर्मयाह ने अपने लोगों की हालत देखी कि उसमें से कितने मर चुके हैं, कितने घायल हो गए हैं, और वे दासों की तरह एक अन्य देश में रह रहे हैं, तो उसने कहा, "भला होता, कि मेरा सिर जल ही जल, और मेरी आंखें आंसुओं का सोता होती, कि मैं रात दिन अपने मारे हुए लोगों के लिये रोता रहता।" (यिर्मयाह 9:1) यिर्मयाह ने अपने लोगों के लिये अपने शोक वा बिलाप को व्यक्त करने के लिये विलापगीत नाम की एक पुस्तक भी लिखीं।

परन्तु यीशु यिर्मयाह की तरह था। वह पापियों का मित्र था, वह दुखी पुरुष था, रोग से उसकी जान-पहिचान थी, वह रोने वालों के साथ रोता था, उसने सिखाया कि शोक करने वालों के साथ शोक करो। जिस नगर में वह रहता था, उसकी पाप पूर्ण स्थिति पर आंसू बहाकर उसने कहा, "हे यरूशलेम हे यरूशलेम; तू जो भविष्द्धक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्होंने पत्थरवाह करता है, कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने

पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूं, परन्तु तुम ने न चाहा।" (मत्ती 23:37)। और जब उसे पता चला कि उसके एक मित्र की मृत्यु हो गई है, तो वह शोकित परिवार के पास गया और उन लोगों के साथ मिलकर रोने लगा। (यूहन्ना 11)।

सो यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला के समान था, वह एलिय्याह के समान था, और वह यिर्मयाह के समान था। परन्तु क्या आप यीशु के समान हैं? पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।" (फिलिप्पियों 2:5)। यीशु दीन था, नम्र था, परमेश्वर का आज्ञाकारी था। और परमेश्वर चाहता है कि आप भी प्रभु यीशु का अनुसरण करके उसके समान बनें। जब आप यीशु में विश्वास करेंगे, और अपने गुनाहों से मन फिराकर, अपने पापों की क्षमा के लिये उस की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेंगे तो यीशु आपका उद्धार करेगा, और अपने समान बनने में आपकी सहायता करेगा। उसी का वचन आपके हृदयों में अधिकाई से बसे।

मन फिराने की आवश्यकता

जे. सी. चोट

बाइबल के इस अध्ययन में हम देखेंगे कि मन फिराने का क्या अर्थ है? मन फिराना बाइबल की शिक्षा है। कई बार हम इसके विषय में बात नहीं करते, परन्तु इसकी आवश्यकता आज पूरे संसार में है। यीशु ने सिखाया था कि उद्धार पाने के लिये मन फिराना आवश्यक है। मसीह की कलीसिया के सदस्य बनने के लिये पापों से मन फिराना आवश्यक है।

मन फिराने का अर्थ है यदि कोई अनुचित मार्ग पर चल रहा है तो उसे वो मार्ग छोड़कर उचित मार्ग पर आना है। इसका अर्थ है मन का बदलना तथा बुराई को छोड़कर पूर्ण रूप से यीशु के पीछे चलना।

यीशु ने एक बार अपने प्रचार में कहा था, कि मन फिराओ नहीं तो अपने पापों में नाश होगे। (लूका 13:3)। प्रेरित पौलुस ने कहा था ''इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। (प्रेरित 17:30)। पतरस ने कहा था, ''प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कई लोग समझते हैं, पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है और नहीं चाहता कि कोई नाश हो। (2 पतरस 3:9)।

परन्तु मन फिराव का सुसमाचार से क्या संबंध है? जैसा कि हमने देखा कि प्रभु चाहता है कि उसके पास आने वाले लोग सब बुराईयों से मन फिरायें। परन्तु जो सुसमाचार को मानना चाहते हैं क्या उनके लिये मन फिराना काफी है? नहीं, यह सुसमाचार की आज्ञा मानने का एक अंग है। आईये इसे विस्तार से देखें।

सुसमाचार एक खुशी की खबर है कि प्रभु यीशु मसीह मनुष्यों के पापों के

लिये क्रूस पर मारा गया तथा कब्र में गाड़ा गया और तीसरे दिन परमेश्वर की सामर्थ से जी उठा! (1 कुरि. 15:1-4)। अब परमेश्वर यह चाहता है कि हम उसकी इन बातों में विश्वास करके इन्हें मानें। यदि हम इन बातों को नहीं मानते तो हमें उद्धार मिलना असंभव है। यदि हम परमेश्वर और प्रभु यीशु में विश्वास करते हैं तो वह अवश्य हमें उद्धार देगा। क्योंकि प्रभु यीशु क्रूस पर मारा गया ताकि हमारा उद्धार हो, इसलिये यह आवश्यक है कि हम पापों से अपना मन फिरायें। यदि हम क्षमा चाहते हैं तो बुराई से अपना मन फिराये। जब पतरस और प्रेरितों ने पिन्तेकुस्त के दिन प्रचार किया तब हम पढ़ते हैं कि सुनने वालों के मन छिद गये, उन्हें यह पक्का विश्वास हो गया कि प्रभु यीशु जीवते परमेश्वर का पुत्र है तब उन्होंने पतरस से पूछा हम क्या करें? तब पतरस ने उनसे कहा, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरित 2:38)। परन्तु यदि वे अपना मन न फिराते तो क्या उनका उद्धार हो सकता था? नहीं। क्योंकि उद्धार पाने के लिये बुराईयों से मन फिराना अति आवश्यक है।

फिर हम प्रेरितों तीन अध्याय में पढ़ते हैं कि पतरस ने एक और स्थान पर यीशु का प्रचार किया और वहां उसने लोगों से कहा, "इसलिये मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाएं जाएं" (प्रेरित 3:19)। हम देखते हैं कि मन फिराना सुसमाचार मानने की आज्ञाओं में एक मुख्य आज्ञा है। उसके बिना पापों से क्षमा नहीं मिलती।

मन परिवर्तन की घटनाएं जो हम प्रेरितों के काम में पढ़ते हैं बताती है कि सबने अपना फिराया था। सामरी लोगों ने अपना मन फिराया तथा खोजे ने जो इथियोपिया का रहने वाला था उसने भी मन फिराया था। शाऊल यानि पौलुस और कुरनेलियुस ने भी ऐसा किया था। इन सबने अपना मन फिराकर बपतिस्मा लिया था। और यह सब मसीह की कलीसिया के सदस्य थे। हम कहीं भी यह नहीं पढ़ते कि किसी ने बिना मन फिराकर प्रभु की आज्ञा मानी है।

एक और बात जो हम मन फिराने के विषय में देखते हैं वो हमें रोमियों 6 अध्याय में मिलती है जहां पौलुस मसीहियों से कहता है, ''सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो? कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर गये तो फिर आगे को उसमें क्योंकर जीवन बिताएं? क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महीमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम, आगे को पाप के दासत्व में न रहे। (रोमियों 6:1-6)।

अब यहां पौलुस हमें यह समझाने की कोशिश कर रहा है कि जब कोई बपतिस्मा लेता है तो वह अपने पापों के लिये मर जाता है और उसे बुराई से अपना मन फिराना है। वह कहता है तुम्हारा पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ा दिया गया ताकि पाप का शरीर मर जाएं। अपने पापों को हम पानी की कब्र में गाड़ देते हैं और तब हमारा सम्पर्क यीशु के लोहू के साथ हो जाता है। जब हम बपतिस्मा लेकर पानी से बाहर आते हैं तब एक नई सृष्टि बन जाते है। प्रेरित पौलुस ने कहा था जो मसीह यीशु में है वे नई सृष्टि है (2 कुरि. 5:17)। पुराने जीवन को समाप्त करके हम नये जीवन की शुरूआत करते है और यह है मन फिराना।

एलोहीम

बैटी बर्टन चोट

भाग एक

परिचय : (चीन, भारत, फारस देश, मिस्र जैसी) प्राचीनतम संस्कृतियों के प्राचीनतम लेखों के अनुसार पहले एक परमेश्वर में विश्वास था परन्तु समय बीतने तथा मनुष्य की सोच बिगड़ने से कई "देवी देवता" जुड़ गए और उसके वर्णनों में मूर्तिपूजा जुड़ गई। परन्तु सबसे प्राचीन लेखों में हमें पता चलता है। कि

1. एक ही परमेश्वर है

2. उसे बलिदान चढ़ाए जाते थे, जिसका प्रमाण दो और विश्वासों से मिलता है

क. नैतिक "सही" और "गलत" का ज्ञान, परमेश्वर को नाराज करना।

ख. प्रायश्चित में पशुओं के बलिदान (लहू की भेटें) दिए जाते थे।

3. आरंभ के समयों से ही, लोग अपने मुर्दों को दफनाया करते थे, कई बार तो "आत्मा" में अपने विश्वास को दिखाते हुए, वे आगे के जीवन में उनके उपयोग के लिए भोजन और/या अपने खजाने भी दफना दिया करते थे।

ये बुनियादी विश्वास पूरी तरह से अदृश्य बातों में है, जो इस बात का सबूत है कि उन्हें यह ज्ञान एक ही स्रोत यानी पहले सृजित मानव (आदम और हव्वा) से तथा उसके बाद प्रलय में बच जाने वालों (नूह तथा उसके परिवार) के द्वारा प्राप्त हुआ था।

1. हम अपनी बात का आरंभ एक अदृश्य परमेश्वर में पाए जाने वाले विश्वव्यापी विश्वास के साथ करते हैं। वह कौन है? क्या हम उन लेखों को मानें जो मूर्तियों को शामिल करके विकृत हो गए या हम बाइबल की ओर देखें जो हमें एक ही परमेश्वर के बारे में बताती है?

2. उत्पत्ति की पुस्तक में देखने पर हमें यह प्रमाण मिलता है कि बाइबल हमें परमेश्वर की ओर से दी गई थी।

1. इसे मूसा के द्वारा जिसका पालन-पोषण मिस्र नामक एक मूर्तिपूजक देश में हुआ था, लिखा गया था। परन्तु इसका आरंभ वह जानकारी देने के साथ होता है जिसे केवल परमेश्वर ने ही बताया हो सकता है।

क. उत्पत्ति 1 में कहा गया है कि शुरू में सब तरफ अंधेरा ही अंधेरा था।

ख. हर तरफ पानी ही पानी था।

ग. फिर परमेश्वर ने सब कुछ सृजा।

2. परन्तु यह परमेश्वर है कौन? परमेश्वर (एकवचन, एक) के लिए इब्रानी शब्द एल है जबकि बहुवचन रूप एलोहीम है। पुराने नियम में बार-बार हमें एलोहीम शब्द मिलता है,

1. "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की" (उत्पत्ति 1:1)।

2. "फिर परमेश्वर ने कहा, " .... (उत्पत्ति 1:26)।

3. "फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनुष्य... हम में से एक के समान हो गया है' ... (उत्पत्ति 3:22)।

4. "हे इस्राएल, सुन यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है" (व्यवस्थाविवरण 6:4)। परमेश्वर के लिए इब्रानी शब्द एलोहीम (बहुवचन) है; एक के लिए इब्रानी शब्द एक हुआ है, न कि अकेला एक।

यहोवा परमेश्वर

4. सो एलोहीम परमेश्वर एक सनातन आत्मा (जिसका न आदि है और न अंत), सर्वव्यापी (हर जगह पाया जाने वाला आत्मा, जो हर जगह मौजूद है), अंतरयामी (सब कुछ जानने वाला) है। परन्तु और अध्ययन से हमें पता चलता है कि वह एक आत्मा है जिसमें बराबर रुतबे वाले तीन व्यक्ति है।

1. उत्पत्ति 1:2 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था।

2. यूहन्ना 1:1 में "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था।"

3. यशायाह 63:1, 9, 10 में "यहोवा", उसके सम्मुख रहने वाले दूत और उसके पवित्र आत्मा अर्थात परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों का परिचय है जो सामर्थ में और हर प्रकार से समान है।

4. निर्गमन 23:20 और 33:2 में यहोवा परमेश्वर मूसा के साथ इस्राएलियों के मिस्र से निकलने के बाद की यात्राओं की बात कर रहा था, जब उसने कहा, "मैं एक दूत तेरे आगे-आगे भेजता हूं...।" 33:14 में उस दूत का परिचय में आप के रूप में किया गया है, निर्गमन 13:21 में दिन के समय बादल में और रात के समय आग में उनके साथ चलने वाले का परिचय "यहोवा" के रूप में निर्गमन 14:19 में उसे "परमेश्वर का दूत" कहा गया है। (इसे हमेशा दूत कहा गया है, न कि एक दूत, और सृजे गए स्वर्गदूतों के लिए कभी दूत या स्वर्गदूत इस्तेमाल नहीं किया गया)। 1 कुरिन्थियों 10:4 में इस्राएल के साथ रहने वाले का परिचय, मसीह के रूप में कराया गया है।

5. यशायाह 48:12, 13, 16 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

हे याकूब,
हे मेरे बुलाए हुए इस्राएल,
मेरी ओर कान लगाकर सुन!
मैं वही हूं, मैं ही आदि और मैं ही अंत हूं।

13. निश्चय मेरे ही हाथ ने पृथ्वी की नेव डाली,
और मेरे ही दहिने हाथ ने आकाश फैलाया,
जब मैं उनको बुलाता हूं,
वे एक साथ उपस्थित हो जाते हैं।

16. "मेरे निकट आकर इस बात को सुनो:
आदि से लेकर अब तक मैं ने कोई भी बात गुप्त में नहीं कही;
जब से वह हुआ तब से मैं वहां हूं।
और अब प्रभु यहोवा ने और उसकी आत्मा ने मुझे भेज दिया है।"

यह स्पष्ट है कि बात करने वाला "यहोवा का दूत" अर्थात वचन ही है। परन्तु ध्यान दें कि वह कहता है कि उसे दो लोगों अर्थात प्रभु यहोवा और उसकी आत्मा ने भेजा है।

5. इसका मतलब यह है कि एलोहीम, अर्थात यहोवा परमेश्वर, वचन तथा पवित्र आत्मा सनातनकाल से हैं। और कुछ भी नहीं था। परन्तु फिर परमेश्वर हर चीज को सृजन करने लगा और सृष्टि की सर्वोत्तम चीज उसके अपने स्वरूप पर बनी मनुष्यजाति था। इसका क्या अर्थ हुआ? केवल मनुष्य को अनश्वर आत्मा या प्राण दिया गया जो कभी नहीं मरती। हम अनादि या सनातन नहीं है, पर हम अनश्वर है।

इस दृश्य की कल्पना करें

परमेश्वरत्व ने भौतिक संसार तथा जीवन के हर विद्यमान रूप का सृजन पूरा कर लिया है। फिर, क्योंकि वह तो प्रेम है, इस कारण उसने एक अनश्वर जीव का सृजन करने की योजना बनाई, जो प्रेम का अनुभव कर सके और बदले में उसे वह प्रेम लौटा सके।

कुछ भी नहीं था, और समय से पहले स्थान और अनन्तकाल की अंतहीनता को एलोहीम की महिमा और उपस्थिति ही भरती थी। खामोशी, सन्नाटा, प्रतीक्षा का एक तीखा बोध...

परमेश्वर बोला, "हमारा कोई आरंभ नहीं है, और न हमारा कोई अंत होगा। परन्तु सनातन होने के अलावा, हमारा सार प्रेम है। हमारे पास विचार करने, तर्क देने की योग्यता वाले अपने जैसे लघु रूप की प्रतियों वाले लोगों का सृजन करने की सामर्थ है। वे अनादि नहीं होंगे, पर हम उन्हें अमर होने का अर्थात जीवन का उपहार दे सकते है ताकि जब हम उन्हें अस्तित्व में ले आएं तो वे फिर कभी न मरें। हम उन्हें प्रजनन की क्षमता भी दे सकते है ताकि वह न केवल हम से प्रेम करना सीखें बल्कि उस प्रेम को अपनी संतान को दे सकें और उनसे बदले में उनका

प्रेम पा सकें। हमारे और उनके बीच में जीवन का एक सम्पूर्ण चक्र होगा।"

"पर रूको!" वचन बोला मुझे भय नजर आता है। आत्मिक जीवों के बीच जिन्हें हम मानवीय प्राणियों की सहायता के लिए बनाएंगे, विद्रोह हो जाएगा और उस विद्रोह के कारण स्वर्ग में युद्ध छिड़ जाएगा। फिर मनुष्य हमारी आज्ञा तोड़ने के प्रलोभन में आएंगे और इस प्रकार वे मनुष्यजाति में पाप ले आएंगे। हम उस सब को जिसे हम ने बनाया खो देंगे और उनके पास हमारे पास लौटने का कोई साधन नहीं होगा।"

"हां आज्ञा न मानना और पाप उन्हें आत्मिक मृत्यु में हम से अलग कर देगा, और वे बेबस हो जाएंगे।"

खामोशी।

"एक रास्ता है, वचन ने धीरे से कहा।" "जो बिना पाप के जन्मा हो वह मानवीय संसार में जन्म लेकर उनके पाप के बोझ को उठाकर उनकी जगह मर सकता है।"

खामोशी।

"मैं यह करूंगा" वचन ने कहा "मेरे लिए यह अपमान वाली बात होगी, पर उस अपमान से भी बढ़कर आनन्द अनन्तकाल के लिए कई भाइयों और बहनों के साथ अपने प्रेम तथा महिमा को बांटने का होगा। मैं यह करूंगा।"

और वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया। (यूहन्ना 1:14)।

(वह) जगत की उत्पत्ति से घात हुआ मेमना" था (प्रकाशितवाक्य 13:8)।

6. पूरे पुराने नियम में, उन वचनों को जिन्हें हमें अभी अभी देखा है ध्यान से पढ़ें और दूसरे और वचन भी, तो पता चलता है कि वह वचन, परमेश्वर के दूत के व्यक्ति (स्वर्गदूत) में परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ का काम करता था। वह जब भी बात करता, यहोवा परमेश्वर के अधिकार और सामर्थ से बोलता था, ताकि परमेश्वरत्व में पाए जाने वाले व्यक्तियों की बराबरी पर कोई अंतर न हो।

पुत्र ने जन्म लिया

7. पापी मनुष्यजाति के उद्धार के लिए प्रबंध किये जाने पर यहोवा परमेश्वर परमेश्वरत्व का पहला व्यक्ति बन जाता है। यूहन्ना 1:14 कहता है, और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।"

1. पुराने नियम में से अगर मैंने सही काउंट किया है तो, "पिता" शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर के लिए केवल ग्यारह बार हुआ है। केवल तभी जब वचन ने अपने आपको शून्य करके (फिलिप्पियों 2:5-8), परमेश्वर के पुत्र और मनुष्य के भाई के रूप में जन्म लिया, तब हम देखते हैं कि परमेश्वर को बार-बार "पिता" कहा गया। हमारे भाई के, पुत्र होने के द्वारा ही हम आत्मिक रूप में परमेश्वर की

संतान के रूप में जन्म लेते हैं, जो हमारा पिता बनता है।

2. कोई कहेगा कि यीशु 100 फीसदी परमेश्वर और 100 फीसदी मनुष्य, पर पवित्रशास्त्र में उसे इस प्रकार से नहीं दिखाया गया है। इब्रानियों 10:5 में हम पढ़ते हैं, इसी कारण जो जगत में आते समय कहता है, 'मेरे लिए एक देह तैयार की'। सो वह मानवीय देह जो मरियम की कोख के अंदर विकसित हुई उसने अनादि वचन को यीशु की देह को जीवन देने वाले प्राण के रूप में रखा। वह वैसे ही जिया जैसे मनुष्य जीते हैं, यहां तक कि जैसे जैसे उसका डील डौल बढ़ा, वैसे वैसे वह बुद्धि में बढ़ता गया। यीशु के और हर अन्य मनुष्य के बीच जो संसार में हुआ, अंतर यह था कि उसने एक भी पाप नहीं किया। उस शुद्धता के कारण ही वह सारे संसार के पापों के लिए बलिदान बन पाया।

3. वचन ने बराबर होने की बात को एक ओर कर दिया ताकि वह सब बातों में परमेश्वर के अधीन हो जाए। सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण को ध्यान से पढ़ें और देखें कि यीशु ने कितनी बार खुलकर ये बातें कहीं कि वह "अपने आप से कुछ नहीं कर सकता?" यूहन्ना 8:28 और 14:10 में उसने साफ साफ ऐलान किया कि जो बातें वह कह रहा था, वे उसे परमेश्वर की ओर से दी गई थीं, और जो आश्चर्यकर्म वह करता था वे परमेश्वर की सामर्थ से किये जा रहे थे। जब मनुष्य के भाई के रूप में उसने जन्म लिया तो उसने अपने आपको पूरी तरह से परमेश्वर पर वैसे ही निर्भर कर दिया, जैसे हम निर्भर है। उसके बपतिस्मा लेने से पहले जब परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा था, जिससे उसे उस काम को करना आरंभ करने के लिए सामर्थ दी, जिसे करने के लिए उसने जन्म लिया था, हमें उसके द्वारा किए गए किसी प्रचार या आश्चर्यकर्म की बात पढ़ने को नहीं मिलती।

4. वह काम आगे के भविष्य के लिए संसार में लाया जाना था, परमेश्वर का उद्धार का संदेश था। वह संदेश जिसे पवित्र आत्मा की प्रेरणा के द्वारा नये नियम में संभालकर रखा गया हैं और उस काम का पूरा होना उसके पकड़वाए जाने, पेशी तथा क्रूस पर मारे जाने से हुआ। इस्राएल में रोमी साम्राज्य के दौरान हजारों लोगों को क्रूस के ऊपर चढ़ाकर मार डाला गया था, परन्तु आज हम उनमें से कितनों के नाम जानते हैं? केवल एक यीशु मसीह का, उसकी मृत्यु के साथ उसका काम खत्म न होने का कारण उसका अपने वायदे के अनुसार, तीसरे दिन कब्र में से जी उठना था।

5. चालीस दिनों के बाद, अपने चेलों के साथ वायदा करने के बाद (यूहन्ना 14:18)। कि मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूगा, मैं तुम्हारे पास आता हूं..." वह स्वर्गमें ऊपर उठा लिया गया जहां अब पिता के दाहिने हाथ बैठा है। 1 तीमुथियुस 6:15 कहता है कि वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है और 1 कुरिन्थियों 15:24 के अनुसार उसने सब वैरियों के ऊपर जिसमें मौत भी शामिल है तब तक राज करना है जब तक उसके सब शत्रु उसके अधीन नहीं हो जाते। इसके बाद वह राज्य को परमेश्वर के सुपुर्द कर देगा, और वह अपने सब भाइयों और बहनों के साथ परमेश्वर का संगी वारिस बन जाएगा। और रोमियों 8:16, 17 के अनुसार,

"आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की संतान है; और यदि संतान है, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस है, जब हम उसके साथ दु:ख उठाएं तो उसके साथ महिमा भी पाएं।"

6. एक बड़ा सबूत जो इस बात को साबित करता है कि यीशु वही था जो होने का उसने दावा किया था अर्थात शून्य बना वचन तथा परमेश्वर का पुत्र और वह यही है कि बेशक निर्धन माता-पिता के घर में एक तुच्छ से गांव में जन्मा, उसका जीवन एक घुमक्कड़ खानाबदोश का सा था और क्रूस पर उसकी मृत्यु दोषी ठहराए गए "अपराधी" की थी, पर उसके जीवन तथा उसकी शिक्षाओं ने सारे संसार के करोड़ों लोगों की संस्कृति को बदल दिया है। उसके चेलों के द्वारा उसके लिए कोई बड़ी यादगार नहीं बनाई गई, पर 2000 सालों के बाद भी हफ्ते के हर पहले दिन करोड़ों लोग जो अपने आपको "मसीही" कहते हैं, अखमीरी रोटी तथा दाख के रस में से भाग लेते हैं, एक ऐसा भोज जो उसकी देह का, जो हमारे पापों की कीमत चुकाने के लिए दी गई थी, एक जीवित स्मारक हैं।

(शेष अगले अंक में)

बातचीत की समस्या को सुधारना

कोय रोपर

नियमों को मानना: विवाह हो जाने के बाद विवाहित दम्पत्ति को उन नियमों का पालन करना होगा, जो उनकी चर्चाओं को संचालित करेंगे। निम्नलिखित समझदारी भरे नियम जो बाइबल के सिद्धांतों से लिए गए है, आपकी अपनी लिस्ट में आरंभिक बिन्दु का कार्य करेंगे।

बारी की प्रतीक्षा करें और टोकें मत: बातचीत एकतरफा ही नहीं होनी चाहिए, दोनों गुटों को इसमें भाग लेना चाहिए। बच्चे जब स्कूल जाना शुरू करते हैं तब वह एक आवश्यक नियम सीखते हैं, बारी की प्रतीक्षा। पहले एक बात करे और फिर दूसरा। जब एक बोल रहा हो तो दूसरे को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए।

इस नियम के साथ जुड़ा हुआ एक और बहुत कठिन नियम है, बीच में टोंके मत और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि बोलने वाला अपनी बात समझाने के लिए कितना समय ले रहा है, चाहे आप यह सोचते हों कि मुझे पता है कि वह क्या कहना चाहता है, अपने साथी को पहले अपनी बात खत्म कर लेने दें।

न तो हडबड़ी में बोलें और न ही क्रोध में: याकूब ने कहा है, "दीन भाई अपने ऊंचे पद पर घमण्ड करे" (याकूब 1:19ख) नीतिवचन 14:29 में बहुत महत्वपूर्ण अवलोकन किया गया है, "जो विलम्ब से क्रोध करने वाला है, वह बड़ा समझ वाला है, परन्तु जो अधीर है, वह मूढ़ता की बढ़ती करता है।" यह पुरानी सलाह आज भी अच्छी है, कोई भी बात जिससे आपको क्रोध आए, उसका उत्तर देने से पहले दस तक नहीं गिनें, आप अपने साथी को क्रोधित शब्दों से उत्तर दे सकते हैं, जिससे उसे चोट पहुंचेगी और उसके बदसूरत निशान रह जाएंगे। इस मामले में अच्छी सलाह एक गीत

में दी गई है।

क्रोध की बातें! उन्हें कभी भी
अपनी बेलगाम ज़ुबान से निकलने न दें;
दिल की बेहतरीन भावना से
देखना कि कहीं वे होंठ पर न लग जाएं।

एक पल की बेपरवाह मूढ़ता के लिए
उदास करने और बिगाड़ने के लिए,
प्रेम इतना अधिक शुद्ध और पवित्र है,
मित्रता इतनी अधिक पवित्र है।

क्रोध की बातें धीमें से बोली जाती हैं,
कड़वे विचार बड़ी हलचल पैदा कर देते है,
क्रोध की एक भी बात से
जीवन की मधुर कड़ियां टूट जाती है।

जब चर्चा झगड़े का रूप धारण करने लगे तो उसे कुछ समय के लिए स्थगित कर देने में ही भलाई है। अगर आपकी सहमति नहीं बनती तो उस मुद्दे पर चर्चा करने के लिए कोई और समय निश्चित कर लें।

उत्साहित करने वाले बोल बोलें: पौलुस ने मसीहियों को केवल वही बोलने के लिए कहा, जिससे दूसरों पर अनुग्रह हो या उनकी उन्नति हो (इफिसियों 4:29)। उत्साहित करने वाले शब्द बोलने की आवश्यकता पर नीतिवचन में भी जोर दिया गया है:

"ऐसे लोग हैं जिनका बिना सोच विचार का बोलना तलवार की नाई चुभता है। परन्तु बुद्धिमान के बोलने से लोग चंगे होते है।" (12:18)।

"शांति देने वाली बात जीवन वृक्ष है। परन्तु उलट फेर की बात से आत्मा दुखी होती है।" (15:4)।

"सज्जन उत्तर देने से आनंदित होता है, और अवसर पर कहा हुआ वचन क्या ही भला होता है।" (15:23)।

"जैसे चांदी की टोकरियों में सोनहले सेब हो, वैसा ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है।" (25:11)।

पति और पत्नी दोनों को यह याद रखना आवश्यक है कि उनके संवाद का असली मकसद एक-दूसरे को प्रोत्साहित करना होना चाहिए। यह पक्का करने के लिए कि आपकी बातचीत उत्साहित करने वाली हो, निम्न तीन निर्देशों को मानना होगा।

अपने साथी की आलोचना कभी न करें। संभवतया: रचनात्मक आलोचना की जा सकती है, कुछ ऐसे ढंगों का सुझाव देकर, जिससे आपके साथी में बदलाव आए या वह कुछ और अच्छा कर सके, लेकिन यह देखा गया है कि कई बार आप अपने साथी के सुधार के लिए उसकी रचनात्मक आलोचना करते हैं, लेकिन वह इसे विनाशकारी रूप में ले लेता है। इसलिए अच्छा तो यही है (जिसके अपवाद हो सकते हैं) कि अपने साथी की कभी भी आलोचना न करें क्योंकि आलोचना से अच्छी बातचीत के रास्ते बंद हो जाते हैं।

अपने साथी की प्रशंसा करें। विनाशकारी शब्दों का इस्तेमाल न करना ही काफी नहीं है, एक मसीही पति-पत्नी को यह आदत बना लेनी चाहिए कि वह एक-दूसरे की प्रशंसा करते रहें और एक-दूसरे को सराहते रहें। उदाहरण के लिए पति को पत्नी के खाना बनाने की तारीफ करनी चाहिए और उसकी खूबसूरती की भी प्रशंसा करनी चाहिए और पत्नी को भी पति के मेहनती होने की प्रशंसा करनी चाहिए। उसे पति की पैसे कमाने और घर की छोटी-मोटी रिपेयर करने की भी प्रशंसा करनी चाहिए। ऐसा पुरुष खुशकिस्मत होता है, जिसकी पत्नी उसकी प्रशंसक हो।

बीच-बीच में आभार जताते रहें। आप हर बार "धन्यवाद" नहीं कह सकते। आपकी पत्नी जो भी करे चाहे वह उसका कर्त्तव्य ही हो, आपको उसकी उस काम के लिए सराहना करनी चाहिए।

अपने शब्दों का चयन ध्यानपूर्वक करें: दो लोगों को यह झूठ कभी नहीं सोचना चाहिए जब उनका विवाह हो गया है, इसलिए वह एक-दूसरे को जो चाहे और जैसे भी अपनी मर्जी से कह सकते हैं। बाइबल की चेतावनी है "तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित... सलोना हो" (कुलुस्सियसों 4:6) यह बात विवाहित लोगों और उनकी बातचीत पर लागू होती है। उदाहरण के लिए जब आप किसी बात पर असहमत हो तो अपना पक्ष रखने के लिए कोई रास्ता खोजें, जिससे आपकी समस्या उलझने के बजाय आसानी से सुलझ जाए।

पक्का कर लें कि समय सही है: अच्छी बातचीत तभी सुचारु रूप से हो सकती है, जब दोनों पक्ष तनावमुक्त हो, क्रोध में न हो और ध्यान पूरी तरह से चर्चा पर ही केन्द्रित हो। जब तक पति अपने दिनभर की थकान और तनाव से उभरा न हो तो पत्नी के लिए आवश्यक है कि वह अपनी दिनभर की शिकायतों को छोड़ दें। यदि पति को पत्नी के साथ कोई जरूरी बात करनी हो, तो उसके लिए आवश्यक है कि वह बच्चों के बिस्तर पर जाने का इन्तजार करे ताकि दोनों इकट्ठे बैठकर उस मुद्दे पर चर्चा कर सकें। पति-पत्नी को बातचीत के लिए भी समय निकालना चाहिए। उन्हें कुछ समय रखना चाहिए जब सब खाकर कुछ समय आराम कर चुके हो तब परिवार के सदस्यों को जो भी जिसके मन में हो, बातचीत करनी चाहिए। यह एक अच्छा तरीका है।

यह फैसला करना कि किस-किस संडे को नहीं जाना है

एंसिल जैंकिन्स

अपनी जीवनी में डॉक्टर सी. एवर्ट कूप ने नये नये बने अपने परिवार की, फैसला लेने की एक बात बताई। अपने व्यस्त शैडयूल के बावजूद उन्होंने फैसला किया वह हर संडे चर्च अटेंड करेंगे। उन्होंने कहा, यह फैसला करने की बजाय कि किस संडे न जाएं यह आसान था कि हर संडे जाया जाए।

कलीसिया की हाजरी पर बात बंद कर देना आसान है। बहुत बार हम परमेश्वर

के प्रति किसी की वफादारी के लिए इसे कसौटी बना देते हैं। किसी ने विश्वासी को इस प्रकार से परिभाषित किया है :

सचमुच में विश्वासी का अर्थ है कि वे आराधना कभी मिस नहीं करते।

ठीक ठीक विश्वासी का अर्थ है कि वे जितना मिस करते हैं उससे अधिक बार आराधना में आ जाते हैं।

अधिक विश्वासी नहीं का अर्थ है कि वे जितनी बार आते हैं उससे अधिक बार गैर हाजिर रहते हैं।

बिल्कुल विश्वासी नहीं का अर्थ है कि वे आते ही नहीं है।

गलत मत समझें, विश्वासी होने और कलीसिया में जाने के बीच सचमुच में संबंध है। केवल संगति में आने का अर्थ यह नहीं है कि कोई विश्वासी नहीं है। फिर भी विश्वासी व्यक्ति ही आराधना करेगा, चाहे केवल आराधना सभाओं में हाजिरी ही स्वर्ग की टिकट नहीं है। हाजिरी लगाने वालों को टिकट नहीं मिल जाएगी।

जब किसी का इरादा सही हो तो किसी संडे को नहीं जा पाया यह कोई समस्या नहीं होगी। वह जिस भी संडे जाना हो, जाएगा। शायद हमें साफ साफ दिखाई नहीं देता है कि कलीसिया का इक्ट्ठा होने का उद्देश्य क्या?

कुरिन्थियों के पहले पत्र में पौलुस कलीसिया की आराधना के कुछ कारण बताता है। कुरिन्थुस की कलीसिया प्रभु-भोज खाने के लिए इक्ट्ठा होती थी। पौलुस ने चाहे खास तौर पर यही नहीं कहा है, पर वह कहता है कि उनकी आराधना इतनी बेतरतीब थी कि वे सही ढंग से प्रभु-भोज में भाग भी नहीं ले पाते थे। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रभु भोज में भाग लेना उनका उद्देश्य था (1 कुरिन्थियों 11:20)। प्रभु भोज में भाग न लेने का अर्थ मसीह के साथ और पवित्र लोगों के साथ सहभागिता न करना है। ये प्रतीकात्मक भोजन उसके साथ हमारी वाचा का नवीनीकरण होता है। यह अपने आप पर उसके और अपने भाइयों के साथ अपने संबंध पर ध्यान करने ओर अपने भविष्य पर ध्यान करने का समय होता है। यदि हम इससे चूक जाते हैं तो हम आत्मिक उन्नति के जबर्दस्त अवसर से चूक जाते हैं।

हमारा इक्ट्ठा होना उद्धार का अवसर होता है (1 कुरिन्थियों 14:26)। आराधना गाने और प्रार्थना करने का समय होता है (1 कुरिन्थियों 14:15)। यह आत्मा की अगुआई में और आत्मा से भरा हो। यह तरतीब से, समझ में आने के योग्य और प्रभावशाली हो, यहां तक कि अविश्वासियों के लिए भी (1 कुरिन्थियों 14:23, 24)। हम आराधना में दर्शकों के रूप में नहीं बल्कि सहभागियों के रूप में आते हैं।

किस दिन आराधना में जाएं, इसका निर्णय करने की समस्या मूल्यों की है। हम किस व्यक्ति के लिए जीने की कोशिश कर रहे हैं, भीतरी मनुष्य के लिए या बाहरी मनुष्य के लिए? भीतरी मनुष्य तो कलीसिया के साथ ही जाना चाहेगा।

जब हम कलीसिया को इस प्रकार के समृद्ध और उपयोगी अनुभव के रूप में देखेंगे जिससे हमारे अंदर सुधार होता है और हम दूसरों में सुधार लाते हैं, तो हम किसी भी संडे मिस नहीं करना चाहेंगे।

राज्य और पराक्रम और महिमा तेरे ही हैं

ह्यूगो मेकोर्ड

आत्मिक शक्तिः जैसे भौतिक सृष्टि की रचना करने वाली परमेश्वर की सामर्थ भयदायक है, वैसे ही पापियों को पवित्र बनाने वाली सामर्थ विनम्र और रोमांचकारी है। जितनी शक्ति परमेश्वर ने अणु में डाली है वह सुसमाचार के एक छोटे से संदेश अर्थात उद्धार दिलाने वाली परमेश्वर की शक्ति के बराबर नहीं हो सकती। बम से संसार को आतंकित तो किया जा सकता है, परन्तु किसी के मन को बदला नहीं जा सकता। परमेश्वर का एक विनम्र बालक विनम्रतापूर्वक के प्रेम के बारे में किसी पापी को बताकर शांति से जितना बड़ा काम कर सकता है वह काम पृथ्वी की कोई शक्ति नहीं कर सकती। परमेश्वर का वह विनम्र दास परमेश्वर का सहकर्मी है अर्थात वह एक माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर की सामर्थ किसी व्यक्ति के मन पर काम करती है। वह यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और कब्र में से जी उठने का शुभ समाचार सुनाता है। जब कोमल हृदय पर सुसमाचार की प्रभावकारी शक्ति कार्य करती है, तो कोई रिश्तेदार या कोई हंसी उड़ाने वालो उसे बपतिस्मे में यीशु को अपने आपको सौंपने से रोक नहीं सकता। परमेश्वर की वह सामर्थ ही उत्तरी पवन या सूर्य की किरणों में उसकी शक्ति से भिन्न है, परन्तु है वह परमेश्वर की ही सामर्थ, पाप में डूबे एक स्वार्थी व्यक्ति को (जिसे परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था) एक नई सृष्टि में बदल सकती है। (देखिए भजन 86:10)। एक भटका हुआ मनुष्य, स्वर्ग की शक्ति से, धर्म और सच्ची पवित्रता की ओर मुड़ सकता है।

अनन्त शक्तिः नये सिरे से जन्म लेने पर हम धन्यवाद देते हुए अति आनन्दित होते हैं, क्योंकि हम देह के बिना भी एक बार फिर से जीएंगे। "उसकी सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है" (इफिसियों 1:19क)। हमें "उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाया" (इफिसियों 1:19ख, 20) हमें परमेश्वर के साथ सदा तक रहने की मीरास मिली है। हम जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साथ अपने सामने उपस्थित करेगा (2 कुरिन्थियों 4:14) और सब कुछ हमारा है (1 कुरिन्थियों 3:21)।

वह इन पाप से श्रापित और नाशवान देहों को, अपनी महिमा में कैसे बदल सकता है? हम यह तो नहीं जानते कि कैसे, परन्तु उसकी सामर्थ में विश्वास रखते हैं "जो ऐसा सामर्थी है कि हमारे मांगने और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है" (इफिसियों 3:20)। उसके कार्य करने के अनुसार जिससे वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है (फिलिप्पियों 3:21), हम अविश्वास में भटकते नहीं बल्कि परमेश्वर को महिमा देते हुए विश्वास में दृढ़ होते हैं (रोमियों 4:20)। हमारी उत्सुकता यही है कि वह न केवल हमारी देहों को जिलाने की सामर्थ रखता है बल्कि उसमें अविश्वासी आत्माओं को आग के नरक में फैंकने की सामर्थ भी है (लूका 12:5)। वह ऐसा करना नहीं चाहता है, परन्तु उसमें ऐसा करने की सामर्थ है।

"महिमा सदा तेरी ही है": परमेश्वर के शासन को कोई चुनौती नहीं है और उसकी सामर्थ सबसे ऊपर है। उसकी महिमा इतनी दीप्तिमान है कि कोई धोबी भी इतना सफेद नहीं धो सकता। जो भी आदर और महिमा मनुष्य या स्वर्गदूत को मिल सकती है वह उसी की है जो हमें अस्तित्व में लाया और जिसने हमें अपने अनुग्रह से छुड़ाया है। बहुत कारणों की सारी महिमा पिता को ही क्यों जाती है। इसका एक कारण यह भी है कि उसने कलीसिया की परिकल्पना की।

बड़ी सफाई से बुनी सुन्दर डिजाइन वाली एक (राजस्थानी) रजाई देखकर यद्यपि मैं इसे बनाने वाले को तो नहीं देख सकता, परन्तु न चाहते हुए भी मेरे मन में विचार आता है, "जिसने भी इस रजाई को बनाया उसने इसे कितना बढ़िया बनाया है।" स्वर्गदूतों और महादूतों ने समय के पूरा होने पर स्वर्ग से नीचे झांका और कलीसिया अर्थात छुड़ाए हुए लोगों, नये सिरे से जन्म लेने वाले बुलाए हुओं को देखा। स्वर्गीय स्थानों में प्रधानताओं और अधिकारों ने उन पवित्र किए गए लोगों को देखकर जो परमेश्वर की कलीसिया बनते हैं, परमेश्वर की बुद्धि के एक बड़े प्रदर्शन को देखा। वे जो हैरान थे कि संसार की नींव रखने से पहले परमेश्वर के मन में क्या था, अन्त में उसकी बुद्धि के प्रदर्शन को देख पाए, क्योंकि परमेश्वर ने एक ढंग बनाया था जिससे पापियों को पवित्र लोग बनाया जा सकता था। मनुष्य हो या स्वर्गदूत जब वे कलीसिया की महानता पर विचार करते हैं, तो उन्हें चाहिए कि उस सफेद से सिंहासन की ओर मुड़ें, अपने पर्दे को हटाएं और पुकारें, "कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन" (इफिसियों 3:21)।

"आमीन": चेलों की प्रार्थना की अंतिम बिनती का अंतिम शब्द आमीन इब्रानी भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ है "पुष्टि करना, समर्थन करना। "पूरी बाइबल में इसका यही अर्थ है, "ऐसा ही हो", "इसी प्रकार हो" (व्यवस्थाविवरण 27:15-26; 1 इतिहास 16:36; नहेमायाह 8:6; रोमियों 1:25; इब्रानियों 13:21)। परमेश्वर करे कि आप जब भी चेलों की प्रार्थना पर विचार करें तो आपके लिए इसका अर्थ नया ही मिले।

हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ्य और विभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा! राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान ठहरा है (1 इतिहास 29:11; यहूदा 24, 25 भी देखिए)।

हमारा परमेश्वर प्रकट होने वाला है

जेम्स ई. प्रीस्ट

एक महत्वपूर्ण अर्थ में, परमेश्वर छुपा नहीं रह सकता। उसका अस्तित्व उसे प्रकट कर ही देता है। उसका स्वभाव सृजनात्मक होने के कारण, सृष्टि भी अपने सृजनहार को प्रकट करती है। जीवों के रूप में हमारा अपना अस्तित्व सृष्टि का प्रमाण है।

कुछ वर्ष पूर्व मुझे वेटिकन में सिस्टाइन चैपल में खड़े होकर छतों पर की गई अद्भुत लेपचित्रकारी की तारीफ करने का रोमांचाकारी अवसर प्राप्त हुआ था। मैं हैरान होकर सोच रहा था कि कला का इतना सुन्दर काम किसी ने कैसे किया होगा, परन्तु

मुझे इसमें कोई हैरानगी नहीं थी कि किसी ने यह काम किया था। उन सुन्दर चित्रों से पता चल रहा था कि किसी ने उन्हें बनाया है। स्तब्ध करने वाले उन चित्रों में, मुझे उन्हें बनाने वाले कलाकार का चरित्र भी दिखाई दिया। मुझे अहसास हुआ कि इस काम को पूरा करने के लिए बहुत लम्बा अरसा लगा होगा। इसके लिए बहुत धैर्य (लगभग साढ़े चार वर्ष के बराबर) आवश्यकता थी। असाधारण निपुणता तो दिखाई दे ही रही थी। इस कार्य में अनुभव तथा अनुपात का उत्कृष्ट ज्ञान दिखाई दे रहा था। स्पष्ट था कि उसमें शारीरिक सहनशक्ति भी आवश्यक थी। संक्षेप में, यह केवल पूर्वनिश्चित निर्णय ही नहीं थी कि ऐसे कलात्मक कार्य के लिए कलाकार की आवश्यकता होती है, उस सर्वोत्तम रचना से मुझे समझ आई कि सबसे बड़े कलाकार में क्या-क्या योग्यताएं होनी आवश्यक है।

सृष्टि में भी ऐसा ही कुछ है यह सृष्टि किसी का भव्य परन्तु साधारण प्रकटीकरण है। इसके सामान्य प्रकाशन में, हम सृष्टिकर्त्ता के अस्तित्व के "केवल" तथ्य से अधिक की समीक्षा कर सकते हैं। सृष्टिकर्त्ता के "चरित्र" के बारे में भी हम थोड़ा-बहुत जान सकते हैं। उदाहरण के लिए, दाऊद ने यह अवलोकन किया था, जो पहले ही बड़ा समर्पित होकर परमेश्वर पर विश्वास रखता था, "आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है" (भजन 19:1)। परमेश्वर की हस्तकला में दाऊद ने उसकी महिमा देखी। आज हम संसार की विशालता और यथार्थता पर हैरान होते हैं जिससे हमारी सौर्य प्रणाली काम करती है। वास्तव में, हम अपनी घड़ियों तथा कैलेण्डरों को देखकर इस सुस्पष्ट व्यवस्था पर निर्भर करते हैं। हम दिन और रात तथा मौसम के बदलने की व्यवस्था को जानते हैं। खगोलशास्त्री हमें उन ग्रहों की स्थिति के विषय में बताते हैं जो हमारे सूर्य के इर्द-गिर्द घूमते हैं और जहां भविष्य में कभी हमारी पृथ्वी पर ग्रहण लगेंगे। हां, उस सृष्टिकर्त्ता की महिमा, महानता तथा व्यवस्था के बारे में हमें उसकी सृष्टि का अध्ययन करने पर कुछ ज्ञान मिलता है।

एक और महत्वपूर्ण अर्थ में, परमेश्वर हमसे छुपा हुआ है। सृष्टि में हमें एक सृष्टिकर्त्ता के तथ्य और सृष्टिकर्त्ता के निश्चित "चरित्र के गुण" दिखाई देते है। परन्तु जैसे सिस्टाइन चैपल के चित्रों से यह पता चलता है कि उन्हें किसने बनाया, वैसे ही सृष्टि हमें स्वयं नहीं बताती कि उसका बनाने वाला कौन है। मुझे चित्रों को देखकर नहीं बल्कि पुनर्जागरण युग के दौरान इटेलियन आर्ट के इतिहास को पढ़कर और उसका अध्ययन करके पता चला कि मिचलेंजलो ने उन चित्रों को बनाया था। इसी प्रकार, बाइबल को पढ़कर और उसका अध्ययन करके जो कि परमेश्वर का विशेष प्रकाशन है, हम यह ढूंढ़ पाते हैं कि इस संसार, अर्थात हमारे संसार को और हमें बनाने वाला कौन है। बाइबल में हम पाते हैं कि वह सबसे बड़ा वास्तुकार है। पवित्र शास्त्र की सहायता के बिना न तो मुझे और न ही आपको पता चल सकता था कि वह सृष्टिकर्त्ता कौन है।

यही कारण है कि परमेश्वर के विषय में विचार करते हुए हमने बाइबल का इस्तेमाल बड़ी सावधानी से किया है सृष्टिकर्त्ता के तथ्य और उस सृष्टिकर्त्ता की कुछ विशेषताओं को तय करने के लिए सामान्य प्रकाशन (प्रकृति) हमारा सहायक होता है,

परन्तु उस सृष्टिकर्ता को बाइबल के परमेश्वर के रूप में पहचानने के लिए हमें पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ना पड़ता है। हमने अपने लोगों के इतिहास में उसके अपने आपको प्रकट करने के रूप में सामर्थ के उसके कामों का भी अध्ययन किया था। परन्तु इतिहास में उसकी संहिप्तता का महत्व उसके सदाचारी स्वभाव में था। यह महान सच्चाई बाइबल में ही मिलती है, जगह-जगह बिखरे उसके कार्यों से नहीं। इसलिए हमारे पास एक छिपा हुआ और प्रकट परमेश्वर है। वह तब तक छिपा हुआ है जब तक वह प्रकृति (सृष्टि) और बाइबल में प्रकट नहीं होता, और तब भी केवल उतना ही प्रकट होता है जितना वह अपने आपको प्रकट करना चाहता है।

बात करने के द्वारा प्रकट हुआ

बाइबल परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से प्रकट होते दिखाती है। उसने इब्राहिम, इसहाक, याकूब, मूसा, शमूएल, नातान, यहेजकेल आदि से बात की थी। उनके साथ उसका यह सम्प्रेषण उन पर इच्छा प्रकट करने के लिए था। वह चाहता था कि उसके लोगों की अगुआई सही ढंग से हो। इसमें ऐतिहासिक तथ्यों से भी अधिक बातें शामिल हैं। उनके बीच में उसके कार्यों के तर्क का आधार और उनसे उसका संबंध उसके प्रकाशन में सर्वोच्च थे। इसलिए, सुरक्षा, अगुआई, संभाल और मेल देने वाले परमेश्वर के चित्रण के लिए उसके कार्य और उसकी बातों को मिला लिया गया। उसकी इच्छा उस संदर्भ से बाहर प्रकट की गई थी।

अपनी वाचा में प्रकट हुआ

समस्त विस्तारों, के साथ वाचा उनके लिए परमेश्वर की दिलचस्पी का मुख्य आकषर्ण थी। वह वाचा लोगों द्वारा प्रकृति का अध्ययन, इतिहास का विश्लेषण या पड़ोसी देशों के कानून की कुछ बातों से नहीं मिली थी। यह प्रत्यक्ष रूप से सीने पर्वत पर मूसा को "दस आज्ञाएं" देकर परमेश्वर की ओर से दी गई थी।

अपने कामों तथा बातों में प्रकट हुआ

परमेश्वर युगों-युगों तक अपने लोगों में अपने आपको अपने कामों तथा बातों से प्रकट करता रहा। उसके कार्यों से उसकी सामर्थ का प्रकटीकरण हुआ। उन कार्यों का उद्देश्य बताते हुए, उसकी बातें उन पर प्रकट की गई थी। यह सब आने वाली पीढ़ियों के लाभ के लिए लिख दिया गया। लोगों को उन लिखी गई बातों की ओर ध्यान देने, उनमें न कुछ जोड़ने और न ही कुछ कम करने की चेतावनी दी गई थी।

परमेश्वर को प्रकट करते उसके काम तथा बातें अपने लोगों से उसके संबंध के लिए आवश्यक है। यदि वह काम न करता, तो उन्हें उसकी सामर्थ का पता नहीं चलना था। यदि वह बात न करता, तो उन्हें उसकी इच्छा का पता नहीं चलता। यदि वह "उद्धार का इतिहास" लिखा न जाता, तो उन्हें यह याद नहीं रहता। याद भी रहता, तो भी वे इसे अपने से अलग कर लेते। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है कि उनके महान अगुओं में से एक ने कहा था- ''....यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़ मेरा छुड़ानेवाला, मेरा चट्टान रूपी परमेश्वर है, जिसका मैं शरणागत हूं, मेरी ढाल, मेरा बचाने वाला सींग, मेरा ऊंचा गढ़, और मेरा शरण स्थान है, हे मेरे उद्धारकर्त्ता, तू उपद्रव से मेरा उद्धार किया करता है'' (2 शमूएल 22:2, 3)।

भविष्यवक्ताओं में प्रकट हुआ

परमेश्वर का महानतम और सम्पूर्ण प्रकाशन अभी आने वाला था। परमेश्वर के भविष्यवक्ता वह माध्यम थे जिनके द्वारा उसकी इच्छा और योजनाएं प्रकट की गई थी। सीनैं पर्वत पर दी गई वाचा के आधीन रहते हुए, वे आने वाली एक नई वाचा की बात करते थे। यिर्मयाह ने इस वाचा का वर्णन करते हुए इसके मूल, इसकी प्रकृति और इसे पाने वालों के लिए इसके लाभदायक परिणामों के बारे में बताया:

फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बांधूगा। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैंने उनके पुरखाओं से उस समय बांधी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, ... मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। और तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा (यिर्मयाह 31:31-34)।

परमेश्वर के नबियों में एक को छोड़कर मूसा के जैसा कोई दूसरा भविष्यवक्ता नहीं था (व्यवस्थाविवरण 34:10-12)। मूसा ने एक नबी के आने की बात की थी जिसने उसके जैसा ही होना था। लोगों के लिए उसकी बात सुनना आवश्यक था, क्योंकि उसने परमेश्वर की बातें उन्हें बतानी थी (व्यवस्थाविवरण 18:15-19)।

अपने पुत्र में प्रकट हुआ

बाद में इस भविष्यवक्ता को दुख सहने वाला मसीह, यीशु (प्रेरितों 3:17-26), धर्मी जिसे मरने के लिए दे दिया गया (प्रेरितों 7:52, 53), के रूप में पहचान मिलनी थी। क्रूस पर चढ़ने से पहले, वह फसह का भोजन खाने के लिए अपने प्रेरितों से मिला। इस भोज के समय उसने रोटी तथा कटोरे को एक नया अर्थ दे दिया। रोटी के लिए, उसने कहा, "लो, खाओ, यह मेरी देह है" कटोरे के लिए उसने कहा, "तुम सब इसमें से पियो। क्योंकि यह (नई) वाचा का मेरा वह लहू है जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है" (मत्ती 26:26-28; मरकुस 14:22-24; लूका 22:19, 20)। अपने बलिदान के द्वारा वह एक नई और उत्तम वाचा का मध्यस्थ बन गया था। उसने पहली वाचा को जीर्ण कर दिया, परन्तु साथ ही पुराने नियम के अधीन विश्वास से रहने वालों के लिए छुटकारे का मार्ग दे दिया (इब्रानियों 8-10)।

नासरत का यह यीशु परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन है। उसका परिचय यशायाह नबी द्वारा "इम्मानुएल" के रूप में दिया गया जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ" (यशायाह 7:14; मत्ती 1:20-23)। इसलिए, अपने लोगों के साथ परमेश्वर के प्रकट होने का संबंध यीशु अर्थात उसके पुत्र में बुलन्दियों को छू गया।

हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया कि उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था (इफिसियों 1:7-9)।

प्रभु-भोज

जैरी बेट्स

किसी भी मसीही व्यक्ति के लिए, प्रभु भोज, जिसे सहभागिता भी कहा जा सकता है, हमारी आराधना का महत्वपूर्ण भाग होना चाहिए। प्रभु भोज के संबंध में निर्देश देने वाले मुख्य वचन हैं मत्ती 26:26-29; लूका 22:14-20 और 1 कुरिन्थियों 11:23-34 प्रभु भोज से जुड़े कई विचार पाए जाते हैं। (1) यह शुक्रगुजारी है। जब यीशु ने प्रभु-भोज की स्थापना की, तो उसने धन्यवाद किया। हमें हमारे लिए मसीह के बड़े बलिदान के लिए धन्यवादी होना चाहिए। (2) यह एक यादगार हैं यादगार हमारे ध्यान में कालांतर में किए गए किसी काम का लाने का काम करती है और सहभागिता हमारा ध्यान यीशु के क्रूस की ओर ले जाती है। 1 कुरिन्थियों 11:25 में हमें यीशु स्मरण में इसमें भाग लेने को कहा गया है। (3) हम प्रभु की मृत्यु का प्रचार करते हैं, "क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।" (1 कुरिन्थियों 11:26) इस प्रकार कुछ हद तक प्रभु भोज प्रचार करने का एक तरीका है। जब दूसरे लोग हमें प्रभु भोज में भाग लेते हुए देखते हैं तो हम यीशु के बड़े बलिदान में अपने विश्वास के अपने कामों से प्रचार कर रहे होते हैं, जिसने हमारे लिए लहू बहा दिया। (4) हमारी एक दूसरे के साथ सहभागिता होती है। 1 कुरिन्थियों 10:16-17 पर ध्यान दें, "वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लोहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं। इसलिए कि एक ही रोटी है सो हम भी जो बहुत हैं, एक देह है, क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं।" सहभागिता शब्द का अर्थ है संगति। इस संदर्भ में पौलुस ने कहा कि मूर्तियों के मन्दिरों में खाना दुष्टात्माओं के साथ संगति था। इसी प्रकार से प्रभु भोज खाने में हमारी संगति यीशु के साथ और एक दूसरे के साथ होती हैं हम मसीह के प्रति परस्पर वफादारी के द्वारा अपनी एकता को समझते और इस पर जोर देते हैं।

प्रभु-भोज में पाई जाने वाली चीजें और अर्थ

प्रभु-भोज में इस्तेमाल की जाने वाली चीजें बेहद सादा हैं। मनुष्य पत्थर, सोने आदि जैसी लम्बे समय तक चलने वाली सामग्रियों से यादगार बनाना चाहता है। प्रभु परमेश्वर ने अपनी यादगार रोटी और अंगूर के रस जैसी नाशवान सामग्री से बनाई। इस सामग्री का अर्थ हमारे मनों से मिलता है। यीशु ने अखमीरी रोटी का इस्तेमाल किया (लूका 22:1, 8-9)। यहूदियों को फसह के अपने पर्व में अखमीरी रोटी का इस्तेमाल करने की आज्ञा दी गई थी सो यीशु ने उसी वस्तु को लेकर जो पहले से प्रचलन में थी, उसे एक नया अर्थ दे दिया। अब यह यीशु के शारीरिक देह को दर्शाता है, जो क्रूस पर हमारे लिये बलिदान की गई। यीशु ने दाख का रस भी लिया (मत्ती 26:29), जो कि अंगूर का रस ही होगा, और कहा कि अब यह उसके लहू को दर्शाता है जो कि शीघ्र ही क्रूस पर बहाया जाने वाला था।

रोटी के संबंध में मत्ती 26 में यीशु ने कहा, "यह मेरी देह है" (मत्ती 26:26)। दाख के रस के संबंध में उसने कहा, "यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा को निमित्त बहाया जाता है" (मत्ती 26:28)। इनके आधार पर कुछ लोगों ने यह गलत निष्कर्ष निकाल लिया है कि रोटी और दाखरस आशीष देने के समय ये सचमुच में यीशु की देह और लहू बन जाते हैं। दिखने में वही, स्वाद नहीं, भौतिक गुण वही, पर वे पहले वाले नहीं है। इस वचन का अर्थ यह नहीं है। यीशु के कहने का अर्थ तो केवल इतना था कि वे उसकी देह और उसके लहू के प्रतीक है। यूहन्ना 10:9 में यीशु ने कहा, "द्वार मैं ही हूं।" यीशु यह नहीं कह रहा था कि वह लकड़ी का दरवाजा है बल्कि यह कह रहा था कि आत्मिक रूप में स्वर्ग का द्वार वही है। केवल दो आयतों के बाद उसने कहा कि "अच्छा चरवाहा" वही है। यीशु ने कभी भेड़ें नहीं चराई थीं यानी कभी चरवाहा नहीं बना था बल्कि आत्मिक रूप में वह हमारे प्राणों का प्रधान चरवाहा है (1 पतरस 5:4)। यीशु द्वार या चरवाहे की तरह है। इसी प्रकार से प्रभु भोज की सादा सी चीजें हमें यीशु की देह और लहू का प्रतीक देती है।

1 कुरिन्थियों 11:24-25 में पौलुस ने कुरिन्थियों को यीशु के शब्द याद दिलाए जो प्रभु भोज की स्थापना की रात उसने अपने चेलों से कहे थे। यीशु ने अपने चेलों से कहा था, "मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।" प्रभु भोज की स्थापना यीशु ने की है इसलिये यह महत्वपूर्ण है। यह केवल कलीसिया का नियम नहीं है जिसे मसीही लोगों को मसीह के बलिदान को याद रखने के लिए कलीसिया ने बहुत साल पहले बनाया हो। हम इसमें मसीह के बलिदान के स्मरण में भाग लेते हैं। परन्तु हमें इसे शोक मनाने के समय के रूप में नहीं देखना चाहिए। बेशक यह गंभीर बात है। तौभी 1 कुरिन्थियों 10:16 में इसे "धन्यवाद" का कटोरा या आशीष का कटोरा कहा गया है। हमारे लिये यीशु की मृत्यु एक बहुत बड़ी त्रासदी नहीं है बल्कि यह सबसे बड़ा दान है यानी सबसे बड़ी आशीष है जो हमें मिली है।

हम प्रभु-भोज में भाग कब लेते हैं?

कलीसियाओं के प्रभु-भोज में भाग लेने के अलग-अलग समय हैं। कई इसे महीने में एक बार, कई तीन महीने में एक बार या केवल विशेष अवसरों के समय लेते होंगे। कई कलीसियाएं हर सप्ताह इसमें भाग लेती है। अक्सर लोग कहते हैं कि बाइबल में ऐसी कोई आज्ञा नहीं है जो साफ-साफ हो कि हमें इसमें कब भाग लेना चाहिए। यह सच है कि साफ-साफ बताने वाली कोई आज्ञा नहीं है कि हमें इस सहभागिता में कब-कब भाग लेना चाहिए। परन्तु यदि कोई समय नहीं ठहराया गया तो फिर यदि कोई जीवन में एक ही बार इसे लेता है तो किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह वह वचन के अनुसार ही होगा।

आरंभिक कलीसिया के उदाहरण से पता चलता है कि उनके इकट्ठे होने का मुख्य कारण सहभागिता करना या "रोटी तोड़ना" था। प्रेरितों 20:7 में हम पढ़ते हैं, "सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इक्ट्ठे हुए तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें की; और आधी रात तक बातें करता रहा।" यहां हम देखते हैं कि कलीसिया रोटी तोड़ने के लिए जो कि प्रभु-भोज मनाने के लिए

एक और शब्द है, न कि केवल पौलुस से वचन को सुनने के लिए इक्ट्ठा हुई। आरंभिक मसीही लेखों से हमें यह भी पता चलता है कि कलीसिया हर सप्ताह सहभागिता करती है । 1 कुरिन्थियों 11:20 में हमें पता चलता है कि कुरिन्थुस की कलीसिया प्रभु-भोज खाने के उद्देश्य के इक्ट्ठा होती थी। इक्टठा होने के समय की आज्ञा सप्ताह का पहला दिन था (1 कुरिन्थियों 16:2) हम हर पहले दिन इक्ट्ठा होते हैं इसलिए हमें हर पहले दिन प्रभु-भोज में भाग लेना चाहिए।

कुछ लोग यह बहस करेंगे कि इतनी जल्दी-जल्दी भाग लेने से इसका महत्व कम हो जाएगा और यह केवल एक रस्म बनकर रह जाएगी जिसे पूरा करना है। ऐसा हो सकता है, परन्तु यह तो आराधना के हर पहलू के लिए कहा जा सकता है। परन्तु कोई यह बहस नहीं करता कि हमें आराधना कभी-कभी करनी चाहिए। 1 कुरिन्थियों 11:28-29 में पौलुस ने इस समस्या पर बात की, "इसलिए मनुष्य अपने आप को जांच लें और इसी रीति से इस रोटी में से खाए और इस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है।" इन वचनों को अक्सर गलत समझा जाता है और हर सप्ताह यह निर्णय लेते हैं कि वे योग्य हैं कि नहीं, इस आधार पर कि उन्हें क्या लगता है कि वे पिछले हफ्ते कितना पवित्र जीवन जीए या नहीं। अनुचित रीति से शब्द एक क्रिया विशेषण शब्द है जो भोज लिए जाने के तरीके को बदल देता है। हमें अपनी जांच करनी है यानी यह सुनिश्चित करना है कि हम मसीह की देह और लहू को याद रखें जो कि हमारे लिए दिए गए थे। यह बहुत ही गंभीर मामला है क्योंकि पौलुस ने कहा कि यदि हम बिना सोचे इसमें भाग लेते हैं तो हम अपने ऊपर दण्ड लाते हैं। हमने आशीष को खोया ही नहीं है बल्कि हमने पाप किया है।

किसे भाग लेना चाहिए?

कई बार यह सवाल पूछा जाता है कि "क्या गैर मसीही लोग प्रभु-भोज में भाग ले सकते हैं?" हमें याद रखना चाहिए कि यह परमेश्वर के साथ और यीशु के साथ सहभागिता है। यीशु राज्य में इसे हमारे साथ खा रहा होता है। राज्य कलीसिया यानी मसीह की आत्मिक देह है; इस प्रकार यह एक आशीष है जो मसीह के राज्य के लोगों के लिए ही सुरक्षित है। कुछ भाई यह तय करना चाहते हैं कि कौन इसमें भाग ले सकता है और वह उन्हें जो उन्हें लगता है कि मसीह से बाहर है, इसमें भाग लेने से मना कर देते हैं। यह हमें न्यायियों की भूमिका में ला देता है जबकि हमें न्याय करने की अनुमति नहीं मिली। हम किसी के मन को नहीं जानते हैं। यह प्रभु का भोज है न कि मेरा या कलीसिया का भोज। यह एक सहभागिता है। यदि किसी की मसीह के साथ संगति नहीं है, तो वह खोया हुआ और मसीह के साथ उसकी कोई सहभागिता नहीं है। व्यक्ति को केवल थोड़ी रोटी खाना और थोड़ा रस पीना है। उसका प्राण किसी प्रकार बेहतर या बुरा नहीं है क्योंकि वह तो पहले से खोया हुआ है। हमें अपने ऊपर और परमेश्वर के साथ अपने संबंधों पर ध्यान देना आवश्यक है। और भाग लेने के समय हमारे मन परमेश्वर के साथ हमारे संबंध पर लगे होने चाहिए न कि दूसरों पर उंगली करने ओर।